प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख
का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ९२ भोपाल, १५ अक्टूबर, डाक १६ अक्टूबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

चौपालों से चौराहों तक, मिटी विषमताओं की खाई। भेदभाव की मैली चादर, शनैः-शनैः ही हट पाई।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९८

कैलाश आदमी

किसी ने सही कहा है समय पंख लगाकर उड़ाता जाता है। जिंदगी में कभी खुशी कभी गम। जिनके जीवन में खुशी ने डेरा डाल लिया है उन्हें गम या दुख का एहसास नहीं होता और खुशी उनके लिए एक अभ्यास और एक आदत बन जाती है।

किसी ने यह भी सच कहा है कि जैसी व्यक्ति की धारणा होती है उसे अपने जीवन में वही धारण करना पड़ता है जिसका उसे पूर्वाभास नहीं होता। धारणा वह अभ्यास है जिसमें हम अपने विचारों को भटकाव से रोक सकते हैं। बस धारणा सही होना चाहिए।

आमतौर पर व्यक्ति अपने बारे में ज्यादा सोचता है, दूसरों के बारे में कम। खुद के बारे में सकारात्मक दृष्टि रहती है वहीं आमतौ पर दूसरों के बारे में नकारात्मक रवैया अपनाया जाता है। सकारात्मक दृष्टि रखने वाले लोग दूसरों के बारे में भी अच्छा सोचते हैं। वैसे मेरा अपना अनुभव यह है कि यदि हम दूसरों के बारे में भी अच्छा सोचते हैं तो हमारे जीवन में भी अच्छाइयों का आवागमन होता रहता है। यदि हम खुशी के दृष्टिकोण से सोचें और हमारा सोच इतना सकारात्मक हो कि हम सोचें कि भले ही मेरे जीवन में खुशी ना आए लेकिन मुझसे संपर्क में रहने वाले लोगों का जीवन खुशियों से भरा रहे और यदि हम आशावादी हैं तो फिर उसकी फलश्रुति भी अच्छी होगी अर्थात ना केवल हमारे संपर्क में रहने वाले व्यक्तियों का जीवन खुशियों से भरपूर या सराबोर रहेगा तो हमारा जीवन भी खुशियों से परिपूर्ण रहेगा।

समाज जीवन में सभी व्यक्तियों के विचार और धारणाएं एक जैसी नहीं होती। यदि मेरा विचार और सोच अच्छा है तो उसका प्रभाव आवश्य दूसरों पर पड़ता है। हम अपने विचार प्राय: अपने तक सीमित रखते हैं लेकिन जो विचारक हैं वे उनका आदान-प्रदान करने से नहीं चूकते। वे यदि लेखक है तो अपने विचार लेखन के माध्यम से व्यक्त करते हैं और यदि सत्संगी हैं तो सत्संग के माध्यम से अपने विचारों का संप्रेषण करते हैं।

मेरा जन्म सुदूर देहात में हुआ। मध्यप्रदेश के ही गुना जिले के एक छोटे से गांव डुंगासरा जागीर में मेरा जन्म हुआ था। बाल्यावस्था में मैं अपने गांव में ही रहा और वहीं से प्राथमिक शिक्षा उत्तीण की। आगे माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने हेतु मुझे पांच किलोमीटर दूर नई सराय नामक गांव में प्रतिदिन जाना-आना पड़ता था। मेरे अपने गांव में मैंने देखा कि वहां रोजाना गांव के बुजुर्ग लोग चौपाल में बैठते हैं। यह चौपाल सरपंच के घर के बाहर मैदान में लगती थी। वहां सरपंच स्वयं अपने अनुभव साझा करते तथा अन्य बुजुर्ग भी अपने अनुभव सुनाया करते थे। मेरी आयु के बालकों एवं किशोरों व युवकों की उपस्थिति सांकेतिक रहती थी। इसमें केवल सवर्ण समाज के लोग उपस्थित रहते थे जो उनके परिजन या आस पड़ौस के परिवारों के सदस्य होते थे जो क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और हमारे कायस्थ समाज से आते थे।

वैसे गांव में कई चौपालें लगती थी जिनमें उपरोक्त चौपाल प्रमुख थी जिसमें लगभग ८-१० बुजुर्ग और दो-चार बाल-किशोर या युवा उपस्थित रहते थे। दूसरी चौपाल नीम ढाना में लगती थी जिसमें क्षत्रिय सवर्ण समाज के अलावा शूद्र या दलित और आज की भाषा में अनुसूचित जाति-जनजाति कहे जाने वाले समाज के लोग भी होते थे। इस चौपाल में सवर्ण समाज के अलावा जो लोग आते वे थोड़ा दूरी बनाकर ऊंची चौपाल के नीचे खिंची लकीर के नीचे बैठते थे।

गांव में एक तीसरी चौपाल लगती जिसमें कुशवाह या कछवाह (काछी) जाति के लोगों का बाहुल्य रहता था वहीं एक चौथी चौपाल भी बढ़ई मोहल्ले में लगती थी जिसमें अधिकांश कारीगर कहे जाने वाले समाज के लोग रहते थे जिनमें बढ़ईयों के अलावा तेली, धोबी, माली, कहार आदि समुदायों के लोग भी रहते थे। मैंने यह कभी नहीं देखा कि एक चौपाल के लोग दूसरी चौपाल में जाते हों। इससे यह सिद्ध होता है तो गांव के विभिन्न समाजों या समुदायों के लोगों में दूरी बनी रहती थी। यदि यह दूरी कम होती तो केवल उस समय जब कोई बड़ा अधिकारी गांव के दौरे पर आता था अथवा कोई संत आता तब वहां सभी समुदायों के लोग एकत्र हो जाते थे।

जैसा कि मैंने आरंभ में कहा खुशी और दुख व्यक्तिगत अभ्यास और आदत के विषय हैं। इन विषयों पर चौपालों में भी मैंने चर्चा होते देखी है। खुशियों के अवसर पर जाति विशेष के लोग एकत्र होते वहीं गम या दुख के अवसर पर भी संबंधित समुदाय के लोग ही जुटते देखता है। शहर में आने पर मैंने पहली यह देखा कि शहर में गांव स्तर पर होने वाला भेदभाव कम ही होता है। खुशी की बात है कि शनै:शनै गांव में भी जाग्रति आई है और जब भी मैं अपने गांव अथवा किसी अन्य गांव में जाता हूं तो लोगों को जातिगत दड़बों से प्राय: बाहर ही पाता हूं।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

चौपालों से चौराहों तक, मिटी विषमताओं की खाई।
भेदभाव की मैली चादर, शनैः-शनैः ही हट पाई।।

लेखिका/समीक्षक-
डॉ. सुनीता त्रिपाठी

पुस्तक केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि भावनाओं का अभिषेक है

'राधा, तुम प्रेम हो' केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि भावनाओं का वह अभिषेक है जिसमें राधाङ्ककृष्ण के दिव्य प्रेम की अनुगूँज पूरे विस्तार के साथ सुनाई देती है। यह पुस्तक पाठक को केवल कथा नहीं सुनाती, बल्कि प्रेम के तत्वज्ञान से साक्षात्कार कराती है — जहाँ प्रेम देह नहीं, आत्मा का उत्सव बन जाता है।

लेखिका ने इस कृति में राधा के त्याग, उनकी मौन वेदना, और कृष्ण के विराट भावलोक को जिस कोमलता से शब्द दिए हैं, वह अत्यंत मार्मिक है। विशेष रूप से महारास के प्रसंग में गोपियों के साथ राधा की उपस्थिति का वर्णन केवल लीलात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक भी है — जहाँ राधा अहंकार का विसर्जन और प्रेम का पूर्ण समर्पण बन जाती हैं।

पुस्तक का सबसे बड़ा सौंदर्य यह है कि यह परंपरा और आधुनिक संवेदना के बीच एक सेतु का कार्य करती है। इसमें राधा केवल एक पौराणिक नायिका नहीं, बल्कि अनंत काल की स्त्री के रूप में उभरती हैं — जो प्रेम करती है, प्रतीक्षा करती है, और अंततः स्वयं प्रेम बन जाती है। लेखिका की भाषा सधी हुई, भावप्रधान और सौंदर्य से संपन्न है। संवादों और वर्णनों में ऐसी सहज लय है कि पाठक स्वयं वृंदावन की गलियों, यमुना के तट और रसलीला की रात्रि में प्रवेश करता चला जाता है। कुल मिलाकर, राधा, तुम प्रेम हो एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है जो पाठक को भीतर से बदल देती है। यह पुस्तक पढ़ते-पढ़ते मन राधा के स्वर में कह उठता है —

प्रेम न कभी था, न होगा — वह तो बस राधा है, और राधा ही कृष्ण है। यह पुस्तक उन सभी के लिए अनिवार्य पाठ है जो प्रेम को केवल भावना नहीं, जीवन का धर्म मानते हैं। -लखनऊ

-निर्दलीय प्रस्तुति

लेखिका का परिचय

डॉ. सुनीता त्रिपाठी, मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश) में जन्मी एक प्रख्यात लेखिका, कवयित्री एवं अर्थशास्त्री हैं। उन्होंने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से अर्थशास्त्र में एमए और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। साहित्य, संस्कृति, ज्योतिष और अंक शास्त्र में गहरी रुचि रखने वाली डॉ. त्रिपाठी की पुस्तकों में 'सुर्ख गुलमोहर' और 'बैकुंठ प्रेम' (कविता संग्रह) और 'राधा तुम प्रेम हो.' ...विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। साथ ही, 'महाभारत कथा सागर' और 'संघ- एक विचारधारा' जैसी पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को सशक्त स्वर दिया है। उनकी रचनाएँ विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। उन्हें शब्द अमृत सुजन सम्मान, साहित्य रत्न सम्मान, हिंदी भाषा भार्गीय सम्मान सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा आद्या नारद पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया है।

पाषाणी प्रतिमा

कहानी/जया मोहन

कुमुद के पति का ट्रांसफर सिंचाई विभाग की फतेहपुर शाखा में हो गया था। यहां कई बरस रहने के कारण जाना यहां से कुमुद को खल रहा था ।कितना प्यार कितना सम्मान यहां पाया था। कितने मीठे रिश्तो की डोर में कुमुद बंध गई थी।

उसे कभी यह लगा नहीं कि यह रिश्ते खून के नहीं है। भाभी, आंटी, बहू सभी के संबोधन अपनत्व से भरे। खुद भी नौकरी में थी ।बच्चे छोटे थे उन्हें मकान मालकिन चाची जी ने ही पाला था। कभी कह देती मैं आया ढूंढ लेती हूं। आप दिन भर कितना परेशान हो जाती हैं चाची जी प्यार भरी झिड़की देते हुए कहती दोबारा यह मत कहना। क्या कोई कमी है मेरी परवरिश में ?नहीं नहीं चाची जी ऐसा मत कहिए। बच्चे भी दादी बाबा के बिना रहना नहीं चाहते थे।

मुझे नींद आ रही थी पति से बोली सो गए क्या? नहीं बोलो क्या बात है। मैं सोचती हूं आप चले जाइए। मैं बच्चों के साथ यही रुक जाती हूं। पति तमक कर उठ बैठे। पागल हो गई हो। मैं तो प्रमोशन लेना ही नहीं चाहता था। तुम ही तो मेरे पीछे पड़ी थी। अब जाना तो पड़ेगा ही कितनी सिफारिश के बाद तुम्हारा भी ट्रांसफर करवाया है। वैसे भी प्राइवेट में ट्रांसफर करवाना बहुत कठिन काम है। मैं चुप हो गई हमारे जाने से चाचा जी और चाचा जी बेहद उदास थे। जब हम यहां से चले तो जोरों की रुलाई फूट पड़ी । लगा अपनों से बिछुड़ रही हूं ।दोनों बच्चे भी दादा-दादी को देखकर बहुत रो रहे थे फतेहपुर में हमें सरकारी आवास मिला था।

एक हफ्ते तो मन ही नहीं लगा। सोचा कैसी है बगल वाली मिलने भी नहीं आई। डोर बेल बजी देखा तो दो महिलाएं सामने खड़ी थी। आप लोग कल ही आए हैं। हमारे पति भी आपके पति के सहकर्मी है। मैं मिसेज तिवारी और यह मैसेज सिन्हा आइए आइए आप। दोनों अंदर आ गई। मैं चाय बना लाई। हम दो क्वार्टर छोड़कर रहते हैं कभी आपको किसी चीज की जरूरत हो तो बताइएगा जरूर। जी जरूर बताएंगे। उनके जाने के बाद मैंने सोचा कि मेरे बगल वाली नहीं आई। शाम को पति से पूछा बगल के क्वार्टर में कौन है? मिसेज सिंह ।उनके पति आपके साथ हैं। नहीं वह खुद पति की जगह सर्विस करती हैं। उनके पति नहीं है।

यहां पर मैंने सर्विस ज्वाइन नहीं की । बच्चों का एडमिशन हो गया। धीरे-धीरे हमारा मन रमने लगा। बस मन में लगा रहता की बगल वाली ना तो मिलने आई ना ही कभी दिखाई दी। एक दिन मैंने अपनी मेहरीन से पूछा तो हंस कर बोली वह तो पाषाणी है। अरे क्या यह उनका नाम है । नहीं नाम तो प्रतिमा है पर सारी कॉलोनी उन्हें पाषाणी कहती है । बड़ी रूखी है ना कहीं जल्दी आती जाती है ना कोई तीज त्यौहार ढंग से मनाती है। कंजूस तो इतनी की बेटा की शादी में, पोते के होने पर भी गाना बजाना तक नहीं किया। मेरा मन उनके विषय में जानने को उनसे मिलने को बहुत हो रहा था । कोई समाज में कैसे कट कर रह सकता है? कोई तो विषम परिस्थिति उनके साथ होगी? इधर दो दिन से उनके घर से बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। शायद बहू आई है। रात में डोर वेल बजने से नींद में खुली देखा रात के 1.00 रहे थे। इतने समय कौन हो सकता है? इनको जगाया दरवाजे पर एक स्त्री खड़ी थी अंकल जी मैं प्रतिमा जी की बहू हूं ।ये आज कानपुर चले गये हैं।

मम्मी जी अचानक बेहोश हो गई है। नाक से खून आ रहा है। आप हमे अस्पताल ले चलिए जल्दी से। इन्होंने कार निकाली। मैं भी घर में ताला लगाकर उनके साथ गई। डॉक्टर ने बताया ब्रेन हेमरेज हो गया है।बहू बहुत रो रही थी हमने धीरज बंधाया मैंने कहा मैं रात में यही रुक जाती हूं। बच्चे को लेकर यहां रहना ठीक नहीं तुम घर जाओ वह घर चली आई। सुबह सबको पता लगा तो मिलने वालों का तांता लग गया। सोचा मेहरीन तो कह रही थी कि किसी से नहीं मिलती जुलती फिर यह सब लोग कैसे ? मिसेज तिवारी से पूछा तो बोली भाभी जी कुछ भी हो सबके दुख में सबसे पहले पहुंचने वाली है ये । ठीक होकर प्रतिमा जी घर आ गई बेटे बहु ने हमारी खूब तारीफ की। एक दिन प्रतिमा जी घर आई आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।अरे इसमें धन्यवाद की क्या बात है? यह तो हमारा फर्ज था। अब धीरे-धीरे प्रतिमा जी मुझे हिल मिल गई कभी वह कभी मैं आपस में मिल लेते कॉलोनी में सभी लोगों को यह देखकर आश्चर्य होता।

प्रतिमा जी की बहू अब मुझे घुल मिल गई थी । उसने एक दिन मुझसे कहा आंटी जी मम्मी से कहिए बच्चे का पहला बर्थडे है। खूब धूमधाम से मनाये। अरे तुम कहोगी तो क्या वह नहीं करेंगी। मैंने कहा भाभी जी बच्चों के प्रथम जन्मदिन पर क्या कार्यक्रम है? कुछ नहीं मंदिर भेज दूंगी। अरे बहू का मन है मनाने दीजिए। नहीं हरगिज नहीं । मुझे आज लगा सच में क्यों लोग इन्हें पाषाणी कहते हैं? मैं चुप थी। इससे आगे बोलने के लिए कुछ बचा नहीं था। अच्छा भाभी जी मैं चलूं ।अरे रुकिए चाय बनाती हूं। नहीं घर जाकर मैं पी लूंगी। कुमुद नाराज हो गई मुझसे नहीं। क्यों नाराज होंगे ? यह आपका व्यक्तिगत निर्णय है।

बैठ आज तुझे कुछ बताती हूं । मैं जानती हूं कि कॉलोनी के लोग मुझे प्रतिमा नहीं पाषाणी कहते हैं। देख कोई पत्थर हृदय नहीं होता लेकिन जब बार-बार दिल टूटता है तो खुशियों से आदमी डरने लगता है। चाह कर भी उसका इजहार नहीं करता इन्हें रोकने में बहुत कष्ट होता है। दिल तो पत्थर करना पड़ता है। सोचो लोग तो एक धक्के में अवसादित हो जाते हैं। मैने तो जन्म से अब तक केवल धक्का ही धक्का खाया है। खुशियों की किरणों के बिखरने से पहले दुखों का ग्रहण लग जाता है। मेरा मन भी दुखी हो गया अनजाने ही सही हम किसी के बारे में क्या-क्या सोच लेते हैं? कुमुद बड़ी मान मनौतियोंके बाद अपने माता-पिता की शादी के 15 वर्ष के बाद मै पैदा हुई ।सारा परिवार खुश था। माता-पिता की खुशी का पारावर नहीं था। बड़ी धूमधाम से सबको न्यौता गया। खूब सोहर गाई गई। जिस दिन सब की दावत थी पिताजी सामान लेने बाजार गए वहीं एक सांड ने पीछे से आकर ऐसा पटका की पिताजी के प्राण पखेरु उड़ गए।

बड़े मामा दयालु थे। मामी बहुत बिगड़ी पर मामा के आगे चुप रही । मुझे घर ले आए बस जीने भर को मेरी परवरिश हो रही थी। बड़ी हुई स्कूल जाने लगी। मामी ताने देती रोती पर मामा के प्यार में भूल जाती। छोटे से ही मामी के साथ काम में हाथ बंटाती पर थोड़ा सा प्यार पाने को तरसती। कभी भी मामी मुझे दो बोल प्यार के ना बोलती। उनकी लड़की का रंग सांवला था। मैं कुछ भी अच्छा बुरा पहनती सबको सुंदर दिखती। मामी को यह बहुत बुरा लगता है ऐसी सुंदरता का क्या करें? करम अभागी है। कोई नहीं पूछता इसको। मामा डांटते तो चुप हो जाती। मामा की बेटी मुझसे बड़ी थी। बड़ी नकचढ़ी जिद्दी और झूठ बोलकर मुझे रोज पिटवाती। वह पड़ोस के जुम्मन चाचा के लड़के के साथ भाग गई ।दोष मुझ पर मढ़ा गया। मामा जी मेरी छाया थे बेटी के दूसरे के साथ जाने का दुख न सह पाने के कारण छोड़ गए दुनिया । मामी ने तो मुझे खूब कोसा। निकल जा करम जली मेरे घर से। मैं रो रही थी। गिड़गिड़ा रही थी। मामी मैं कहां जाऊंगी। कहीं भी जा मर जा कहीं जाकर। तू तो सबको खा गई।

पड़ोसियों ने मामी को खूब समझाया कहां जाएगी? यह सयानी लड़की है जमाना खराब है? मैं क्या जानू कहां जाएगी? क्या होगा? मैं नहीं रख सकती इसे। अगर आप लोगों को रखना है तो आप लोग इसे अपने घर में रख लो और कह कर मामी ने मुझे धक्के देकर दरवाजे से रात में बाहर ठेल दिया। मैं रात भर रोते हुए ठंड में दरवाजे पर बैठी रही पर मामी को जरा सी भी दया नहीं आई। सुबह में उठी कहां जाऊं। बस कदम जो बढ़ रहे थे। अनजानी मंजिल की ओर। कब तक चलती रही मालूम नहीं। मैं कब बेहोश होकर गिरी पता नहीं चला। आंख खुली तो आश्रम सा था। एक बुजुर्ग मेरे सिर पर हाथ फेर रहे थे।

बिटिया बताओ तुम्हारा कहां घर है मैं तुम्हें वहां पहुंचा दूंगा। कहीं नहीं है मेरा घर कोई नहीं है मेरा। मैं मरना चाहती हूं। यह पाप है बिटिया। मैं रो पड़ी तो क्या करूं मैं? उन्होंने मुझे चुप कराया कहा कुछ मत करो ।बस यही रहो तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं इस आश्रम में रहने लगी आश्रम की पाठशाला में मैं बच्चों को पढ़ाती। वहीं पर इंदर जी से मेरी मुलाकात हुई वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे थे ।साथ ही आश्रम के कार्यों को भी देख रहे थे।

एक दिन इंद्र की मिठाई का डब्बा लाए बोले बाबा यह कहती है कि यह अप शगुनी है पर मेरे लिए तो बड़ी भाग्यशाली है । मेरी नौकरी सिंचाई विभाग में लग गई ।बाबा ने हमारी शादी तय कर दी। उनके परिवार वालों को भी मैं पसंद आ गई थी। मैंने कहा बाबा बस साधारण से मंदिर में विवाह कर दीजिए। अरे ऐसा क्यों हम खूब धूमधाम से तेरा ब्याह करेंगे। खूब धूम थी आश्रम में मेहंदी हल्दी सभी कुछ धूमधाम से मनाया गया। मैं तैयार हो रही थी मीठे सपनों में डूब कर। दुल्हन के रूप में मुझे देखकर। फोन लग नहीं रहा था। मैं तो बार-बार प्रभु से प्रार्थना कर रही थी कुछ बुरा ना दिखाना 12 बजे एक जीप रुकी सभी दौड़ पड़े। देखा इंदर जी चार अन्य के साथ खड़े थे। बाबा ने पूछा क्या हुआ बारात कहां है ? वह भरे गले से बोले हम लोग आए हैं। बस बहू विदा कर कर ले जाएंगे । मेरी इकलौती बहन का बेटा सीढी से गिरकर मर गया। यहां भी मातम सा छा गया। बस फेरे लेकर मैं शांतिपूर्वक ऐसे गई जैसे दुल्हन नहीं कोई अर्थी जा रही हो। वहां भी बहू का स्वागत होना नहीं था। दिल से किसी ने मुझे नहीं स्वीकारा। कुछ दिनों बाद मेरी सास मेरे कार्यों से खुश हुई। मुझसे बोलने लगी यह मेरे लिए कोई वरदान से कम ना था। दिन बीत रहे थे सास की तबीयत कभी ठीक रहती कभी खराब। उनके डर से मेरे मुंह पर कोई कुछ ना कहता । मैं गर्भवती हो गई सास बहुत खुश थी। समय पर मैंने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया। इधर सास की तबीयत ज्यादा गड़बड़ रहने लगी बच्चों की पैदाइश पर भी कोई उत्सव नहीं मनाया गया। एक दिन सास ने कहा अरे 6 महीने हो गए हैं । अन्नप्राशन पर सबको दावत दे दो। बच्चे बड़े होंगे जानेंगे कि उनके होने पर किसी ने कोई खुशी नहीं मनाई तो बहुत दुखी होंगे ।सारी तैयारी हो गई। सबको कार्ड बंट गए अरे इंद्र की शादी से अब तक कुछ नहीं हुआ। उत्सव से एक रात पहले अचानक सासू मां को जोर की खांसी आई और उसके साथ ही उनके प्राण पखेरू उड़ गए ।सुबह कार्यक्रम था। सूतक पड़ गया खुशियों की दावत की जगह तेरहवीं की दावत हुई बहुत डर गई थी मैं। भगवान क्यों द्वार तक लाकर खुशियों को लौटा ले जाते हो। ससुर जी हरिद्वार गए तो लौटकर नहीं आए।

बच्चों के प्रथम जन्म दिवस पर इन्होंने कहा सभी दोस्त कह रहे हैं पार्टी करें। नहीं कोई पार्टी नहीं होगी। पागल हो गई हो तुम। हां मैं पागल हो गई हूं। मैं प्रभु से मना रही थी कि थोड़ी सी खुशी मेरी झोली में डाल दो। खूब धूमधाम से बर्थडे की पार्टी हुई । रात में कहने लगे देखो तुम बेकार में डर रही थी। मेरा मन अंदर से आशंकाओं से भरा था। मैं चुप थी रात में कूलर बंद हो गया गर्मी से बच्चे रोने लगे यह उठ बोले मैं भी देख कर आता हूं। बहुत देर हो गई यह लौट कर नहीं आए तो मैं बाहर निकली।

कूलर में करंट आने के कारण उनके प्राण पखेरू उड़ गए थे। मेरी जिंदगी में अंधेरा ही अंधेरा छा गया था। बाबा ने सुना वह आए मुझे आश्रम ले गए। मेरी स्थिति पागलों सी हो गई। ना खुद खाती ना बच्चों को दूध पिलाती। बेटी कमजोर थी ऊपर का दूध पचा ना पाई डायरिया में चल बसी। एक दिन बाबा ने बहुत समझाया देख इस बच्चे की ओर कितना मासूम कितना प्यारा है। इसके लिए समय गहरे से गहरे जख्म भर देगा। मुझे उनकी जगह नौकरी मिल गई। मैं फतेहपुर आ गई सोचा खुशी नाम को भूल जाऊंगी। बस बच्चे के लिए जिंदा लाश बनकर जिऊंगी । सारी संवेदनाएं मर गई मैं ज्यादा मौन रहने लगी। मुझे ढोलक गाने बजाने से डर लगने लगा। मैं इसीलिए किसी के सुख में नहीं जाती की कहीं मेरी काली छाया उन पर ना पड़े। मैं जानती हूं सबने मेरा नाम पाषाणी कर दिया है। ठीक ही तो किया यही तो होना भी चाहिए था । पाषाण ना होती तो इतने वक्त के गहरे प्रहारों को कैसे सहती बच्चे की कोई भी खुशी पूरी नहीं कि वह रोता मम्मा सब बच्चे बर्थडे मनाते हैं मेरा भी मनाओ। मैं तरह-तरह से उसे समझाती वह रोकर चुप हो जाता फिर उसने कहना ही छोड़ दिया।

चाहती तो मैं भी थी रोती मैं भी थी कि मासूम का दिल तोड़ दिया। बच्चा नौकरी में लग गया। सब लोग दावत मांग रहे थे मैंने कहा कोई दावत नहीं बस सबको प्रसाद खिला दो। दोस्त भी मेरे साथ उसका उपहास उड़ाते। शादी भी मंदिर में हुई बिना गाजे बाजेके सब हंसी उड़ा रहे थे कितनी कंजूस है तेरी मम्मी। अरे शादी कोई बार-बार थोड़े होती है। पोता होने पर भी मैंने कुछ नहीं किया मुझे दुखों से नहीं खुशी से डर लगता है। बता इतना सहकर तू कुछ कर पाने की हिम्मत कर पाएगी। भगवान ना करें मेरे बहू बेटे पोते को कुछ हो गया तो अपराध बोध से मैं मर जाऊंगी मैं ।पता नहीं कब से दरवाजे पर बहु खड़ी थी। दौड़कर वह प्रतिमा जी से लिपट कर रोने लगी मम्मी हम वही करेंगे जो आप चाहोगे आप हमारे लिए सबसे बड़ी खुशी है। हमें आपका आशीर्वाद चाहिए आपका साथ चाहिए। आपके आगे दुनिया में सब कुछ बेकार है। कुमुद आवाक होकर देख सुन रही थी। कितनी समझदार बहू है। कुमुद ने कहा भाभी जी आप तो सच में परिस्थितियों की कसौटी में कसी हुई सुंदर पाषाण प्रतिमा के सदृश हैं। जो मंदिरों की तरह पूजनीय है। मैं आपके जज्बे को सलाम करती हूं ईश्वर से विनती करती हूं कि आपके लिए खुशियों का द्वार खोल दे बड़ी भाग्यशाली हैं आप इतनी संस्कारी बहु बेटे की मां है। समय पंख लगा कर उड़ चला प्रतिमा जी रिटायर्ड हो गई ।हमने वह उन्होंने आसपास मकान बनवाए। वह आश्रम के काम में लग गई। बाबा जी के जाने के बाद आश्रम का सारा काम देखती लोग उनका आशीर्वाद पाना सौभाग्य समझते हैं। उनके दर्शन को सौभाग्य मानते हैं। वाह रे विधाता कितना तपा कर तूने पत्थर को सोना बनाया। पोते का विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ। मन आनंद से भर गया प्रभु अब कभी उनकी तरफ दुखों की खिड़की मत खोलना। सदा आनंद का द्वार ही खुला रखना।

-प्रयाग